

महाभारतः मनुष्य और मशीन के बीच अद्वृत सामज्जस्य

Prasoon Kumar Mishra^{1*} Dr. Subhash Kumar Singh²

¹ Research Scholar, Department of Sanskrit, Maharaj Vinayak Global University, Jaipur

² Research Director, Department of Sanskrit, Maharaj Vinayak Global University, Jaipur

सार – महाभारत संसार का विशालतम् ग्रन्थ है। इसमें अर्थव्यस्था और राजनीति की हरेक विधा का विस्तार से वर्णन किया गया है। अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत विज्ञान और प्रौद्योगिकी का भी सविस्तार वर्णन किया गया है। इसका वर्णन करते समय महाभारत के रचनाकार ने इस बात का ध्यान अवश्य रखा है कि जैसे विज्ञान और प्रौद्योगिकी जीवन को आसान बना देती है उसी तरह से महाभारत ग्रन्थ में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के सिद्धांतों के माध्यम से जीवन-यापन के सिद्धांतों को समझाना आसान बना दिया है।

X

महाभारत साक्षात्कार और वार्तालाप के रूप में संकलित किया गया है। इसमें 1 लाख ६८०८ श्लोक हैं। पाठ्यान्तर में देखा जाए तो 1 लाख २१७ श्लोक से लेकर 1 लाख १० हजार अथवा 1 लाख ४० हजार तक ६८०८ का वर्णन भी मिलता है। स्पष्ट है कि महाभारत ग्रन्थ यूनान के काव्यों इलियड और ओडिसी की तुलना में कई गुणा, लगभग दस गुणा बड़ा है।

पृथ्वी, सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह, नक्षत्र, चारों युग, चारों वेद, अद्यात्म, नदी, पर्वत, जंगल, समुद्र इत्यादि का विस्तार से वर्णन किया गया है। वर्हीं, ज्योतिष, युद्धनीति, योगशास्त्र, अर्थशास्त्र, वास्तुशास्त्र, शिल्पशास्त्र, कामशास्त्र, खगोलविद्या तथा धर्मशास्त्र और शरीर विज्ञान का भी विस्तार से वर्णन किया गया है।

ग्रहनक्षत्रताराणां प्रमाणं च युगैः सह।

ऋचो यजूषि सामानि वेदाध्यात्मं तथैव च॥

न्यायशिक्षा चिकित्सा च दानं पाशुपतं तथा।

इति नैकाश्रयं जन्म दिव्यमानुषसंज्ञितम्॥

तीर्थानां चैव पुण्यानां देशानां चैव कीर्तनम्॥

नदीनां पर्वतानां च वनानां सागरस्य च॥

पुराणां चैव दिव्यानां कल्पानां युद्धकौशलम्। आदि 1.66-69

महाभारत की प्रसिद्धि भारत के बाहर भी हजारों वर्षों से रही है। यूनान के पहली शताब्दी के राजदूत डियो क्रायसोसटम (Dio Chrysostom) के अनुसार दक्षिण-भारतीयों के पास एक लाख ६८०८ का एक ग्रन्थ है। भारत में लिखे गए कई ग्रन्थों को दूसरे देश के विद्वानों पढ़ा, महाभारत को भी पढ़ा। धीरे धीरे महाभारत पर कुछ काम भी शुरू किया गया। जिस ग्रन्थ को पहले एक सम्प्रदाय और परलोक की बात करने वाला माना जाता था वही ग्रन्थ अब कई आयाम और कई फलकों वाला माना जाने लगा है। 1987 के 27 अक्टूबर को THE NEW YORK TIMES ने महाभारत पर STEVEN R. WEISMAN का एक लेख प्रकाशित किया था। लेख का शीर्षक दिया था 'Many Faces of the Mahabharata' वे लिखते हैं "The actual story, however, makes up only about a fourth of the work. The rest consists of digressions into ethics, philosophy, statecraft, cosmology, myth and countless other subjects." Countless other subjects अर्थात् अनगिनत विषयों को महाभारत में सम्मिलित किया गया है।

महाभारत में जितने भी प्रतिपाद्य विषयों का आकलन किया गया है, वे सभी वार्तालाप और संवाद के रूप में हैं, जिसका उदाहरण विकसित वैज्ञानिक पहलुओं के साथ जुड़ा हुआ है। इसलिए कहा गया है कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष से जुड़ी वे सारी बातें जो किसी के जीवन से जुड़ी हो सकती हैं, उसका विस्तृत वर्णन महाभारत में है। इतना ही नहीं यह भी कहा गया है कि जिन बातों का वर्णन यहां नहीं मिलता है, वह फिर कहीं दूसरी जगह नहीं मिल सकती। यह एक अतिशयोक्ति

जैसी अवधारणा हो सकती है, लेकिन इतना अवश्य है कि महाभारत का पटल अत्यधिक विस्तृत है।

धर्मं चार्थं च कामे च मोक्षे च भरतर्जभा।

यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्कवचित्॥ स्वर्गा. 5.50

महाभारत धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष से जुड़े हर विषय को विस्तार से वर्णित कर उसे व्याख्यायित करता है। वर्ण्यविषय भले ही ज्योतिर्विज्ञान, धातुविज्ञान, सामाजिक विज्ञान पदार्थ विज्ञान या मनोविज्ञान ही क्यों न हो लेकिन अंतिम पद प्रधान बनाकर काव्यलिंग अलंकार की स्थापना करते हुए जीवनोपयोगी बातों का प्रतिपादन करना या फिर अध्यात्म और योग के किसी बड़े सिद्धांत का प्रतिपादन करना इसकी विशेषता है। इसलिए ऐसा कहा जा सकता है कि महाभारत का कथोपथन मनुष्य और मशीन के बीच समन्वय है।

संस्कृत भाषा के जर्मन विद्वान प्रो. डॉ. गेरोर्ग फॉन जिम्जन महाभारत पर पुस्तक लिख डाली - महाभारता : दी गोसे एत्सेलुंग फॉन देन भारतास् (महाभारत : भारतीयों की महाकथा)

जर्मन विद्वान हेर्मन याकोबी गणित के छात्र थे। इसी क्रम में उन्हें भारत की ज्योतिषविद्या अर्थात् ज्योतिर्विज्ञान को भी पढ़ने का अवसर मिला। ये बात 1903 की है। भारतीय ज्योतिषविज्ञान के प्रति वे बहुत आकर्षित हुए। उन्होंने संस्कृत सीखी और बाद में भारतीय ज्योतिषशास्त्र पर ही शोधप्रबंध लिखकर पीएचडी की उपाधि प्राप्त की।

महाभारत में ज्योतिर्विज्ञान के कई दृष्टांत और उदाहरण मिलते हैं। चन्द्रमा और सूर्य की अलग-अलग गति होती है। यह बात सोलहवीं सदी के आस पास ही प्रकाश में आया था लेकिन, महाभारत में ग्रहों और उपग्रहों की गति की चर्चा मिलती है। सूर्य की गति की भी चर्चा है। उद्योग पर्व में एक प्रसंग आता है कि श्रीकृष्ण को जो भी पराजित करने की सोचता है वह प्रज्ज्वलित अग्नि की हाथों से बुझाने की सोचता है इतना ही नहीं चन्द्रमा की गति और सूर्य की गति को बाधित करने या रोकने की सोचता है। ऐसा लगता है कि कृष्ण को पराजित करना असम्भव है जिसे स्थापित करने के लिए चन्द्रमा और सूर्य को रोकने की बात कही गई है। लेकिन इनकी गति के भी प्रमाण आगे मिल जाते हैं।

अग्निं समिद्धं शमयेद् भुजाभ्यां

चन्द्रं च सूर्यं च निवारयेत्

हरेद् देवानाममृतं प्रसहय

युद्धेन यो वासुदेवं जिगीषेत्। उद्योग. 48.73

महाभारत में सूर्य के गतिमान होने का वर्णन मिलता है। अभिजित् सहित अद्वाइस नक्षत्र प्रत्येक अद्वाइस दिनों तक सूर्य के सात विचरण कर अमावस्या के बाद अलग हो जाता है। वस्तुतः अपने अक्ष पर सूर्य का अभ्यन्तरिका 27 दिनों से ज्यादा समय का होता है।

अष्टाविंशतिरात्रं च चक्रम्य सह भानुना

निष्पतन्ति पुनः सूर्यात् सोगसंयोगयोगतः॥

उद्योग.110.16

सूर्य में गति होने की बात गैलिलियो के समय आई, जब 1611 में उनके एक पत्र में सूर्य की गति होने की बात लिखी मिली। बाद में कैरिंगटन ने 1853 में इस पर काम शुरू किया। इसी के आस पास कई अन्य वैज्ञानिकों ने भी सूर्य की गति को जानने के लिए विधिवत शोध शुरू किया था।

जर्मन विद्वान हरमन ओल्डबर्ग ने लिखा, “महाभारत एक सरल गाथा के रूप में शु डिग्री हुआ। शताब्दियों के चलते वह एक दैत्याकार जंजाल बन गया।” मूल कहानी के साथ-साथ उपाख्यानों का जंगल और धर्म, दर्शन, विज्ञान, कानून, राजनीति इत्यादि पर अंतहीन व असंख्य निर्देश विद्यमान हैं।”

2019 के जनवरी माह में महाभारत पर शोध करने अर्जेंटीना के प्रोफेसर-छात्रों की टीम हस्तिनापुर पहुंची। 11 जनवरी 2019 के स्थानीय समाचार-पत्रों ने इसे उचित स्थान दिया। जिसमें लिखा गया कि महाभारत पर शोध करने के लिए अर्जेंटीना के ऐरिश यूनिवर्सिटी की प्रो. ल्यूसिया मोनटेंगो के नेतृत्व में 30 प्रोफेसर और शोधार्थियों की टीम प्रोफेसरों की टीम हस्तिनापुर पहुंची। टीम ने प्राचीन पांडव टीले का निरीक्षण किया और पुरातात्त्विक महत्व के स्थलों को देखा। अर्जेंटीना की ऐरिश यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर चारों वेदों, महाभारत, भागवत गीता और हस्तिनापुर की ऐतिहासिकता पर शोध कर रही हैं। इनका मकसद महाभारत की प्रामाणिकता को पूरी दुनिया के सामने लाना है।

देश और विदेश में बड़े बड़े स्तर पर शोध चल रहे हैं।

महाभारत का वन पर्व या अरण्य पर्व पूरी तरह से पर्यटन का एक मानचित्र प्रस्तुत करता है। इसमें नदियों के किनारे बने

तीर्थों का वर्णन है वर्हीं पहाड़ों पर जलस्त्रोतों, कुण्डों का वर्णन है। जंगलों में अवस्थित ऋषियों के आश्रमों का वर्णन है तो समुद्र के किनारे के धर्मस्थलों का भी वर्णन है। हिमालय के पास चमसोद्देशीर्थ में सरस्वती नदी का उद्गम होने की बात महाभारत के वनपर्व में आयी है।

एष वै चमसोद्देशो यत्र दृश्या सरस्वती।

यत्रेनामभ्यवर्तन्त सर्वाः पुण्यः समुद्रगाः॥ वन. 130.5-6

सरस्वती नदी के अस्तित्व को लेकर इतिहासकारों में लंबे समय तक विवाद की स्थिति बनी रही बाद में लुप्त सरस्वती शोध शुरू हुआ तो हरियाणा में सरस्वती की धारा खोजी गई। बड़ी संख्या में शोधार्थियों ने काम शुरू किया।

महाभारत की विशेषता है मनुष्य के जीवन के सिद्धांतों को मरीचों के प्रतिष्ठापित करना। इसके लिए जीव-जन्तुओं के व्यहार का भी सहारा लिया गया है।

भारत में रेशम बनाने या रेशम के कपड़े बनाने का कारोबार लंबे समय से रहा है। रेशम के कीड़े वृक्षों के पत्तों को खाते हैं और कुकुन बनाते हैं। कुकुन पूरा करते करते रेशम का कीड़ा अन्दर ही मर जाता है। वह कुकुन ही धारों का गूंथा हुआ समूह होता है। जिसे कई प्रक्रियाओं के द्वारा निकाला जाता है। यह कुटिर उद्योग और लघु उद्योग के रूप में जारी है साथ ही धीरे धीरे यह वृहत् उद्योग के रूप में भी चल रहा है। यहां महाभारत के रचनाकार ने इस जीव के साथ शांति पर्व में एक बड़ा दृष्टांत जोड़ दिया है। जैसे रेशम का कीड़ा अपने चारों ओर धारों वाला कुकुन गढ़ता है वैसे ही निर्गुण आत्मा अपने द्वारा ही उत्पन्न प्राकृतिक गुणों से धीरे धीरे स्वयं ही बंधता जाता है।

कोशकारो यथाऽस्त्मानं कीटः समनुरुन्धति।

सूत्रतन्तुगुणैर्नित्यं तथाऽयमगुणो गुणैः॥ शांति 303.4

विज्ञान की बातों को किसी काव्यलिंग अलंकार के साथ समेटते हुए महाभारत में ऐसे सैकड़ों उदाहरण मिल जाते हैं जो मानव और मरीच के बीच का सामञ्जस्य बनकर प्रस्तुत हुए हैं। सभा पर्व में कपूर के जलने की प्रसंग आया है। लेकिन कपूर को द्वितीय स्थान पर रखते हुए मित्रता के सिद्धांत को आगे रखा गया है। मित्रों, सुहृदों या हितैषियों की उपेक्षा नहीं करना चाहिए क्योंकि अगर छूट गया तो बाद में कुछ भी हासिल नहीं होगा। जैसे कपूर के जलने के बाद राख भी नहीं मिलता है।

मित्रातामनुवृत्तं तु समुपेक्षेत पण्डितः

प्रदीप्य यः प्रदीप्ताग्निं वाक् चिरं नाभिधावति

भस्मापि न स विन्देत शिष्टं कचन भारत॥ सभा. 64.10

कर्पूर (CAMPHOR C10H16O) 1,7,7-Trimethylbicyclo[2.2.1]heptan-2-one. यह अत्यधिक ज्वलनशील पदार्थ के रूप में जाना जाता है। कपूर के जलने का बारिकी से अद्ययन और कपूर के होने की बात दोनों की महाभारत काल में होना या उस समय के जीवनयापन में इसका चलन होना इस बात की पुष्टि करता है कि कपूर निर्माण की कला लोगों को मालूम था। कपूर के जलने के ज्यादा महत्व उसके गुण को दिया है कि जलने के बाद राख तक नहीं मिलती है। इस गुण की तुलना की है मित्रता के भाव से – मित्रों की उपेक्षा हुई को बाद में कुछ हाथ लगने वाला नहीं।

ऐसा ही एक उदाहरण शांति पर्व में चुम्बक को लेकर है। इसमें कहा गया है कि जैसे चुम्बक के प्रति लोहे में आकर्षण होता है और वो चुम्बक की ओर खिंचा चला आता है उसी तरह से अपने ही शरीर से उत्पन्न प्राणियों के प्रति अविद्या कामादि स्वयं से उनकी ओर खिंचे चले आते हैं।

अभिद्रवत्ययस्कान्तमयो निश्चेतनं यथा ।

स्वभावहेतुजा भावा यद्वदन्यदपीदशम् ॥ शान्ति. 211.3

अब तक पश्चिम से मिले सोतों के आधार पर तो मैग्निशिया में किसी चरवाहे पर पहली बार चुम्बक मिला था। बाद में 1600 में इंगलैंड के विलियम गिलबर्ट ने इस पर विधिवत काम कर चुम्बक की खोज और प्रतिष्ठापना की थी। महाभारत ही नहीं कई ग्रन्थों में अयस्कान्त – अयस् का कान्त, प्रयोग मिलता है। यानि धातु के चुम्बक का वर्णन है। अन्य विधि से भी चुम्बक बनाने की रास्ता रहा होगा इसलिए धातुचुम्बक को अलग रखा गया है वरना केवल कान्त का ही प्रयोग किया जा सकता था। सुश्रुत शल्यक्रिया यानि ऑपरेशन में शरीर के कील आदि निकालने के लिए कान्त या अर्थात् चुम्बक का प्रयोग करते थे। इसके लिए ज्यादा शक्तिशाली चुम्बक की आवश्यता होनी चाहिए। इसलिए कोई कृत्रिम विधि भी चुम्बक बनाने के लिए रही होगी। आधुनिक विज्ञान की ओर देखें तो विद्युत चुंबक का आविष्कार 1825 में विलियम स्टर्जन ने किया था।

अस्तु, चुम्बक और प्राणी के जीवन दर्शन का एक दृष्टान्त यहां अनूठा है।

ताम्बे के उपर सोने और चांदी की लेप यानी पानी चढ़ाना। इससे उसकी शोभा काफी बढ़ जाती है। सोने का पानी चढ़ाने

से सुनहला दिखता है तो सोने का अहसास कराता है और चांदी का पानी चढ़ाने से चांदी का अहसास कराता है। उसकी शोभा बढ़ जाती है। इस कलई करना कहते हैं। इससे तांबे के बर्टन हो या कोई भी उपस्कर, उसकी क्षय होने की अवधि बढ़ जाती है। ऐसा ही आभूषणों में भी होता है और इसका प्रचलन काफी होता है। महाभारत के रचनाकार ने इस धातुकर्म की प्रक्रिया को जीवन और पूर्व जन्म के कर्मों के साथ जोड़ दिया है। वे कहते हैं जैसे कर्म के वशीभूत होकर प्राणी पूर्वकृतकर्म से लिप्त होने के कारण आर्थत् शुभकर्म के कारण सुखी और गर्हित कर्म के कारण दुखी होता है। यहां स्वर्णादि से कलई करने की बात शुभकर्म का द्योतक है।

सौर्वं राजतं चापि यथा भाण्डं निषिद्धते।

तथा निषिद्धते जन्तुः पूर्वकर्मवशानुगः॥ शांति 290.11

जैसे स्वर्णकार सोने को बार बार अग्नि में डालने से उसका शोधन होता जाता है और उसकी चमक भी बढ़ती जाती है। उसी तरह प्राणी भी अनेक जन्मों में स्वयं का परिशोधन कर लेता है।

यथा हिरण्यकर्ता ये रप्यमप्नो विशोधयेत।

बहुशोऽतिप्रयत्नेन महात्मकृतेन ह। शांति.280.11

लोहादि धातुओं को गर्मकरने और द्रवीकरण करने के बाद उसे जिस पात्र में रखा जाता है उसी पात्र का आकार ले लेता है। यहां दो बातें हैं। एक तो यह कि प्रौद्योगिकी के इस सिद्धांत से महाभारत के रचनाकार जीवन के एक बड़े सिद्धांत का प्रतिपादन कर रहे हैं। दूसरा, धातुओं को गर्मकरने और इन्हाँ गर्म करने की बात बता रहे हैं, जिससे उन धातुओं का द्रवीकरण हो जाए। धातुओं के द्रवीकरण के लिए उस तरह के मिश्र धातुओं का पात्र चाहिए। यह टेक्नोलॉजी उनके पास थी जिससे एक बड़े और निश्चित तापमान तक उसे ले जाया जा सके। यहां वर्णन है कि पिघले हुए धातु को एक जिस विशेष पात्र में रखते हैं वैसा ही रूप ले लेता है। जिस तरह से गर्भ स्थापित होने के बाद शिशु गर्भ के अनुसार आकृति ले लेता है।

यथा लोहस्य निःस्यन्दो निषिकतो बिन्बविग्रहम्।

उपैति तद् विजानीहि गर्भं जीवप्रवेशनम्॥ आश्व 18.9

भीम की लौह प्रतिमा - टेक्नोलॉजी की दृष्टि से यह भी एक अद्वितीय उदाहरण है। महाभारत के युद्ध के समाप्त होने के बाद पाण्डव श्रीकृष्ण को लेकर धृतराष्ट्र और गान्धारी से मिलने पहुंचे। दुर्योधन के वध के कारण धृतराष्ट्र भीम पर क्रोधित था।

पास आते ही भीम को गले लगाने के बहाने उन्होंने छाती से लगाकर जोर से दबाकर चूर कर दिया। बाद में पश्चाताप करने लगा। श्रीकृष्ण ने भीम की जगह भीम की लौह प्रतिमा रख दी थी। जन्म से अंधे धृतराष्ट्र ने उसे ही भीम समझकर चूर कर दिया। लेकिन भीम के आकार की लौहे की प्रतिमा इतने कम समय में बना ली गई। यह एक बड़ी बात है। आश्वमेधिक पर्व में लौहे के काम, लोहा पिघलाने का वर्णन मिलता है। लौहे की प्रतिमा बनवाकर कृष्ण ने धृतराष्ट्र के सामने रखवा दिया जिससे भीम की जान बच सकी। भीमसेन के सौष्ठव लंबाई और आकार के हिसाब से वैसी ही प्रतिमा का निर्माण करना धातुकर्म का एक अद्भुत उदाहरण है।

उपगुह्यैव पाणिभ्यां भीमसेनमयस्मयम्।

बभञ्ज बलवान्नाजा मन्यमानो वृकोदरम्॥ स्त्री 12.17

वृक्ष में जीवन होता है, यह बात महाभारत में बड़े ही तथ्यात्मक तरीके से वर्णित है। शांति पर्व में भृगु ऋषि और भारद्वाज ऋषि के बीच का संवाद बहुत महत्वपूर्ण है जिसमें पेड़ -पौधे जीवन पर बताया गया है। वे देखते हैं, वे सुनते हैं, वे खुश होते हैं या दुखी होते हैं, वे औषधि ग्रहण करते हैं और वे सूर्य के प्रकाश में भूमि से जल ग्रहण कर भोजन बनाते हैं।

इसी तरह अनुशासन पर्व में भीष्ण और युधिष्ठिर संवाद के क्रम में प्रसंग आया है कि किसी व्याध ने विष बुझे बाण से एक विशाल वृक्ष को वेध दिया। इसके कारण उस वृक्ष में सब ओर विष फैल गया और धीरे धीरे उसके सभी फल और पत्ते गिर गए और वृक्ष सूख गया। व्याध ने तो मृग के शिकार के लिए बाण चलाया था लेकिन निशाना चूक गया। बिष के प्रयोग से जन्तुओं ही नहीं वनस्पतियों पर भी प्रभाव होता है।

स तीक्ष्णविषदिग्धेन शरेणातिबलात्क्षतः।

उत्सृज्य फलपत्राणि पादपः शोषमागतः॥ अनु 5.6

महाभारत में पोत का उल्लेख मिलता है। पोत सामान्य नौका की तुलना में बहुत बड़ा होता है। यन्त्रयुक्त बहुत बड़ी नौका होती है जिसमें कई दिनों तक रहने और व्यापार एवं सुरक्षादि के लिए सारी सामग्री होती है। बड़ी-बड़ी नौका या जहाज भी इसकी परिधि में नहीं आते बल्कि अतिविशाल यन्त्रयुक्त नौका की चर्चा महाभारत में हुई है अर्थात् पोत। यहां इस उन्नत नौका अर्थात् पोत की चर्चा करते हुए महाभारत के रचनाकार ने भीष्म की तुलना करते हुए उदाहरण दिया है। भीष्म ऐसे युद्ध कर रहे थे कि मानो कौरवों की रक्षा के लिए

पोत बन गए हैं। हर ओर आए हुए प्रहार का उत्तर प्रहार से देने में सक्षम पोत।

ते हन्यमानाः पार्थेन भीष्मं शान्तनवं ययुः ।

अगाधे मज्जमानानां भीष्मः पोतोऽभवत् तदा। भीष्म 81.45

खदान या खान की चर्चा महाभारत में विस्तार से मिलता है। महाभारत में स्पष्ट कर दिया गया है कि संसाधनों के अन्तर्गत खदान का प्रमुख स्थान है। धातु पहले अयस्क के रूप में होता है। खदान से निकाले जाने के बाद निष्कर्षण और परिशोधन विधि से धातुओं को अन्य पदार्थों से अलग किया जाता है। इसके लिए उच्च तापमान पर परिष्कार किया जाता है। यहां वर्णन है कि लोहादिधातुओं से युक्त स्वर्ण को आग में परिष्कृत किया जाता है, बिना परिष्कार के सोना शोभायमान नहीं होता है। उसी प्रकार चित्त के रागादि दोषों के विनष्ट हुए बिना विज्ञान अर्थात् विशिष्ट जानस्वरूप आत्मा प्रकाशित नहीं होती है।

लोहयुक्तं तथा हेम विपक्वं न विराजते।

तथाॽपक्वकषायाख्यं विज्ञानं न प्रकाशते॥ शांति 212.6

रथ को चलाने के लिए घोड़े की जरूरत होती है। अश्व ही रथ को लेकर चलते हैं। जिस रथ में जितने अश्व जुते होते हैं, उस रथ गति उसी के अनुसार होती है। जैसे विष्णु के रथ में सात अश्व जुते होते हैं। अर्जुन के रथ में सौ घोड़े जुते होने का भी वर्णन मिलता है।

श्वेतास्तस्तस्मिन् वातवेगः सदश्वा

दिव्या युक्ताश्चित्ररथेन दत्ताः

भुव्यन्तरिक्षे दिवि वा नरेनन्द

येषां गतिर्हायते नात्र सर्वा

शतं हतं दत्तवरं पुरस्तात्॥ उद्योग.56.13

अस्तु, अश्वों की संख्या ही रथकी गति को निर्धारित करती है। अश्वों की शक्ति ही अश्वशक्ति होती है। आज भी कार्य, ऊर्जा और शक्ति के अध्ययन में तीनों की अलग अलग इकाई का प्रयोग बताया जाता है। इनमें शक्ति की (UNIT) अश्वशक्ति (HOURSE POWER) ही है। हॉर्सपावर का प्रयोग 18 वीं सदी में स्कॉटलैंड देश के एक इंजिनीयर जेम्सवाट ने किया था। वे वाष्प-ईंजन से मिलने वाली शक्ति की तुलना अश्व द्वारा

खींचने की शक्ति की थी। हालांकि बाद में धीरे धीरे शक्ति के लिए वाट का प्रयोग भी होने लगा था।

महाभारत में विकास कार्यों के लिए प्रतिपादित विज्ञानादि के सिद्धान्तों को आगे बढ़ाने के लिए अर्थात् आने वाली पीढ़ी को बताने के लिए वृद्धजनों की आवश्यकता को महत्ता दी गयी है।

समाज सीनियर सिटिजन के लिए महाभारत में बड़ा सम्मान है। महाभारतकार का कहना है कि जहां वृद्ध लोग नहीं होते हैं वहां धर्म का और सत्य का अभाव होता है। बूढ़े लोगों की उपस्थिति के बिना सभा आदि कार्यक्रम सुचारू रूप से नहीं चल सकता है।

इसे एक कड़ी के रूप में सजा दिया है कि जहां वृद्ध लोग नहीं होते वहां वो सभा अच्छी नहीं होती। जो धर्म की बात नहीं कहता है वो वृद्ध भी वृद्ध नहीं है। जहां सत्य की बात नहीं है वह धर्म नहीं है और जहां कपट है वहां सत्य नहीं होता।

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा

न ते वृद्धा ये वदन्तिर्धर्मम्

नासौ धर्मौ यत्र न सत्यमस्ति

न तत् सत्यं चच्छलेनाभ्युपेतम्॥ उद्यो.35.58

डॉ. बलदेव उपाद्याय लिखते हैं कि सौति ने महाभारत को काव्यों का स्वामी बताया है, जिस प्रकार उन्नति के अभिलाषी सेवक अभिजात स्वामी की सेवा करते हैं। उसी प्रकार संसार के श्रेष्ठ कवि महाभारत की सेवा करके काव्य की रचना करते हैं संस्कृति साहित्य के अनेक कवियों ने महाभारत से प्रेरित होकर तथा महाभारत के आख्यानों का आश्रय करके काव्यों और नाटकों की रचना की है।

ओल्डनबर्ग कहते हैं: “महाभारत में भारत की एकीकृत आत्मा और उसके प्रत्येक निवासी की आत्मा जीवित है।”

भारत के समाज पर दो ग्रन्थों का प्रभाव सबसे ज्यादा है- रामायण और महाभारत। रामायण ने कई आदर्शों को स्थापित करने की कोशिश की है जो समाज में काफी लोकप्रिय है। महाभारत श्रीकृष्ण के उपदेश, कथाओं के संग्रह, जन-सामान्य के व्यवहार और ज्ञान-विज्ञान-पौदयोगिकी के सिद्धान्तों को जीवनोपयोगी बनाने की दिशा में स्थापित करने का एक अद्भुत ग्रन्थ है, जिसमें सिद्धांत और व्यहार के बीच सामन्जस्य रखा गया है।

REFERENCE

1. Modern Concepts In Ancient Indian Science Dr. N Gopalakrishnan, Swadeshi Science Movement, Convent Road, Kochi, Kerala
2. The Physics Dr. N G Dongre, Sanskriti Bharti, New Delhi
3. History of Chemistry in Ancient and Medieval India by Sen., P P Ray edited by P Ray. Indian Chemical Society, Calcutta, 1956
4. A Concise History of science of India by B V Subbarayappa, India National Science Academy, Delhi, 1971
5. Rasa Ratna Samuchchaya by Bagbata, D. Joshi (Indian journal of History of Science), Indian National Science Academy -New Delhi. 1992
6. इण्डियन स्टूडियेन - अलब्रेट वेबर, 1852.
7. दि ग्रेट एपिक - वाशवर्न हारिकन्स, 1901.
8. कौटिल्य अर्थशास्त्रम् आर पी काङ्गले, मोतीलाल बनारसी दास पब्लिसर्स प्रा. लि.
9. सुश्रुत संहिता – सुश्रुत, अम्बिकादत्त शास्त्री, चौखम्भा संस्कृत सिरीज, वाराणसी, 1972
10. चरक संहिता – चरक, रामकरण शर्मा एवं विद्या भगवान दास, चौखम्भा संस्कृत सिरीज, वाराणसी- 1972
11. वृहत् संहिता
12. वराहमिहिर, एम. रामचन्द्र भट्ट, मोतीलाल बनारसी दास पब्लिसर्स प्रा. लि. 1981
13. Indian Tradition of Chemistry and chemical Technology Prof. Vasudeva Murthy & Prasun Kumar Mishra, Samskrita Bharti
14. आदि पत्रकार नारद का संचार दर्शन
15. प्रो. ओम प्रकाश सिंह, अर्चना प्रकाशन, 17 दीनदयाल परिसर, ई-2 महाबीर नगर, भोपाल
16. भारत में विज्ञान का उज्ज्वल परंपरा
17. सुरेश सोनी, अर्चना प्रकाशन, 17, दीनदलाय परिसर, ई/2 महाबीर नगर, भोपाल
18. महाभारत, गीताप्रेस कोरखपुर
19. महाभारत, भंडाकर ओरिएन्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट, पुणे
20. Indian Science in the Pre-Adi Sankara Period
21. Prof. Kuppa Venkata Krishna Murthy, Chairman, I-Serve, Alkapuri, Hyderabad, 2007
22. धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पूरक हैं पण्डित श्री राम शर्मा आचार्य, श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, हरिद्वार
23. लुप्त सरस्वती शोध – ल. श्री वाकणकर, डॉ. चि ना. परचुरे, अनुवाद- प्र. ग सहस्रबुद्धे, श्री बाबा साहेब आपटे स्मारक समिति, नागपुर
24. Scientists of Ancient India And Their Achievements – Dr. O. P. Jaggi(Assistant Director and Head Department of Clinical Research Vallabh Bhai Patel Chest Institute, University of Delhi), Atma Ram & Sons, Delhi

Corresponding Author**Prasoon Kumar Mishra***

Research Scholar, Department of Sanskrit, Maharaj Vinayak Global University, Jaipur